GYANBODH

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

शीर्षक - राष्ट्रीय पुनरुत्थान में भारतीय शिक्षा की भूमिका : ऐतिहासिक अध्ययन

दीप सिंह तोमर (शोध अध्येता)

इतिहास अध्ययनशाला,जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर

मेल-deepsinghtomar19@gmail.com

संपर्क सूत्र- 9826243223

सारांश

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना तथा धर्म, अर्थ, काम से होते हुए मोक्ष के लिये प्रेरित करना होता था । इस ज्ञान परंपरा के कारण भारत सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा वैज्ञानिक दृष्टि से विश्व में अग्रणी देश रहा। अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य को दीर्घजीवी बनाने के लिए सनातनी मूल्यों पर आधारित शिक्षा को नष्ट करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया, जिसके परिणामस्वरूप भारत स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी मानसिक दासता से ग्रस्त है। इस मानसिक गुलामी से मुक्ति दिलाने तथा राष्ट्रीय पुनरुत्थान के लिए प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक संपूर्ण शिक्षा को भारतीय मूल्यों पर आधारित, भारतीय संस्कृति की जड़ों से पोषित तथा भारत केन्द्रित बनाने हेतु पाठ्यक्रम, पद्धति में भारतीयता लाने के लिए आवश्यक अनुसंधान करना इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य है।

बीज शब्द - राष्ट्रीय गौरव, पुनरुत्थान, भारतीय शिक्षा, युगानुकूल, गुरुकुल परंपरा

'तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तये।
आयासायापरं कर्म विद्यान्या शिल्पनैपुणम'।।[1]

भारतीय ज्ञान परंपरा में विद्या का उद्देश्य मुक्त होना माना गया इसके अतिरिक्त किए गए कर्म और परिश्रम कौशल मात्र हैं। ऐसी शिक्षा जिससे व्यक्ति का सर्वांगीण अर्थात् शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक रूप् से विकास होता था। प्राचीन शिक्षा पद्धति में प्रत्येक पीढ़ी प्राचीन निधियों का संरक्षण ,संवर्धन एवं हस्तान्तरण करती थी। इस पर शासकों का काई नियंत्रण नहीं होता था। प्राचीन वाङ्मय में इसे ऋषि-ऋ़ण माना गया है, इस ऋण से उऋण होने के लिए आने वाली पीढ़ी की शिक्षा व्यवस्था का समुचित

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

प्रबन्ध करना और अपने पूर्वजों से प्राप्त विद्या रूपी धरोहर को और अधिक संवर्धित कर उन्हें सौंपना अपना कर्त्तव्य माना जाता था ।

भारतीय शिक्षा मूलतः गुरुकुल आधारित होती थी जहाँ विद्यार्थियों का चरित्र, ज्ञान एवं संस्कार शिक्षा के त्रिवेणी संगम में व्यवहारिक जीवन का तीर्थराज बन जाता था।

गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई ।
अलप काल बिद्या सब आई ।।[2]

यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात् छात्र गुरू के आश्रम में जाकर अध्ययन किया करते थे, जिसमें राजपुत्र, युवराज, ब्राह्मण पुत्र अथवा सामान्य छात्र सभी समान रूप से गुरू की छत्रछाया में शिक्षा ग्रहण करते थे। उपर्युक्त चौपाई दशरथ पुत्रों के संदर्भ में है, जो कौसलपुर के राजकुमार होने के बावजूद गुरू के आश्रम में विद्या अध्ययन के लिए गए थे। गुरुकुलों का जीवन, गुरू-शिष्यों का परस्पर संबंध इतना उदार व आदर्श होता था कि उस जीवन-पद्धति में पढ़ने लिखने वाले सभी विद्यार्थी अत्यधिक तेजस्वी, विद्यावान, चरित्रवान, संस्कारों से पूर्ण तथा बलवान होते थे। गुरू के यहाँ रहने के दौरान ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन करना होता था, जिसमें थोड़े से वस्त्र धारण करना, भूमि पर शयन करना, भिक्षाटन करना, गुरू की सेवा करना आदि होता था। भिक्षाटन में राजकुमार से लेकर निर्धन परिवार तक के सभी ब्रह्मचारी शामिल होते थे। इस पद्धति से पढ़कर निकले हुऐ व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो जाता था। स्नातक बह्मचारी का समाज में इतना सम्मान होता था कि यदि राजा और स्नातक छात्र, दोनों आमने सामने चले आ रहे हों तो राजा ही हटकर स्नातक ब्रह्मचारी को मार्ग देता था।[3] प्रत्येक देश में शिक्षा व्यवस्था वहाँ की राष्ट्रीय चेतना, संस्कृति एवं परंपराओं की सर्वोच्च अभिव्यक्ति होती है। भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था समृद्धशाली, वैभवमयी, संस्कारों से पोषित, नैतिक मूल्यों पर आधारित थी। भारत को ज्ञान के मामले में विश्व का सिरमौर माना जाता था। राजनीतिक दृष्टि में रामराज्य, आर्थिक दृष्टि से सोने का गरुड़ था। सामाजिक क्षेत्र में वसुधैव कुटुम्बकम् जैसा उदात्त भाव एवं **'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्'**[4] जैसा श्रेष्ठ विचार भारतीय प्राचीन शिक्षा व्यवस्था का ही परिणाम है।

इसी गौरवशाली परंपरा के कारण भारतीय सामर्थ्य, ज्ञान, तकनीकी, विज्ञान, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, कला, संस्कृति, स्थापत्य शैली, चित्रकला, संगीत शास्त्र, दर्शन आदि सभी क्षेत्रों में हमेशा विश्व में अग्रणी रहे।

'बेद पुरान सुनहिं मन लाई। आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई'।।[5]

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

वेद, पुराणों की शिक्षा मन लगाकर प्राप्त करना और फिर अपने अनुज अर्थात् छोटी कक्षा के विद्यार्थियों को स्वयं का सीखा हुआ सिखाना रामायाणकालीन शिक्षा व्यवस्था की एक प्रमुख पद्धति थी। इन व्यवस्थाओं ने भारत को सांस्कृतिक रूप से इतना शक्तिशाली बना दिया था, कि हजारों वर्षों के आक्रमणों ने विश्वविद्यालयों, पाठशालाओं, पुस्तकालयों को नष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी इसके बावजूद भारतीयों के गौरव, स्वाभिमान, मूल्यों, पुनर्बोध, पुन:निर्माण करने वाले स्वभाव को नष्ट नहीं कर सके। क्यों कि इसके पीछे भारत की वह शिक्षा व्यवस्था थी, जिसमें समाज का प्रत्येक वर्ग, वर्ण, जाति, सम्प्रदाय, धर्म आदि समान रूप से संलग्न था। प्राचीन भारतीय शिक्षा में किसी तरह का कोई भेदभाव नहीं था।

"भारत उपासना पंथों की भूमि, मानव जाति का पालन पोषण, भाषा की जन्म भूमि, इतिहास की माता, पुराणों की दादी, एवं परंपरा की परदादी है। मनुष्य के इतिहास में जो भी मूल्यवान एवं सृजनशील सामग्री है, उसका भंडार अकेले भारत में है। यह ऐसी भूमि है जिसके दर्शन के लिए सब लालायित रहते हैं और एक बार उसकी हल्की सी झलक मिल जाए तो दुनिया के अन्य सारे दृश्यों के बदले में भी उसे छोड़ने के लिए तैयार नही होंगें।"[6] पश्चिमी चिंतक मार्क ट्वेन की उक्त टिप्पणी यह प्रमाणित करती है कि भारत ने विश्व को ज्ञान, विज्ञान, कला, कौशल, दर्शन का हजारों वर्षों तक अवदान दिया।

हजारों वर्षो के आक्रमणों में यूनानी, सीथीयन, पह्लव, कुषाण, हूण, शक, अरब, तुर्की, अफगानी एवं मुगल आक्रांताओं ने भारत में प्रवेश कर अपना साम्राज्य स्थापित किया परंतु वर्तमान में इन आक्रमणकारियों के अवशिष्ट भारत में दिखाई नहीं पड़ते क्यों कि इन सबको भारतीय समाज ने पचा लिया। भारत की इस पाचनशक्ति का रहस्य उसकी भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित संस्कृति है, जो चिर पुरातन और नित्य नूतन है। यह अपने आप में इतनी विशिष्टता और विविधता लिए हुए है कि किसी एक जाति, वर्ण, वर्ग, समुदाय एवं क्षेत्र को नष्ट करने से नहीं मिट सकती।

उत्तरमुगल सम्राट जब अपनी शासन सत्ता को संभालने में असमर्थ होने लगे तो यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगीज, डच, अँग्रेज एवं फ्रांसीसीओं ने भारत में व्यापारी के रूप में प्रवेश किया और धीरे-धीरे राजनैतिक शक्ति बनकर उभरे, जिनमें अँग्रेज अधिक प्रभावशाली थे। इसलिए उन्होनें अन्य शक्तियों को हराकर भारत के अधिकांश भाग पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इस प्रभुत्व को चिर स्थायी बनाने के प्रयास में अँग्रेजों ने भारतीय

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

समाज को, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूप से विघटित करने का निश्चय किया। भारत को धार्मिक, जाति, वर्ण, सम्प्रदाय, क्षेत्र एवं भाषा आदि के आधार पर तोड़ने की योजनाएँ बनाई गईं।

प्राचीन काल से ही भारत में वर्ण, जातियाँ एवं जनजातियों का अस्तित्व रहा किंतु भारतीय समाज में जातियाँ कभी भी संघर्ष का कारण नहीं बनी अपितु इसके विपरीत जातियों के आपसी सहअस्तित्व के कारण भारत कई आक्रमणों के बाद भी दीर्घजीवी रहा। इसलिए अँग्रेजों ने भारत में ऊँच-नीच, पिछड़ेपन, तथा सवर्णों द्वारा शूद्रों का शोषण, अत्याचारों जैसे मिथक प्रचारित किए, जिससे भारतीय समाज आपसी वर्ग व जाति संघर्ष के द्वारा तोड़ा जा सके। जबकि वास्तविकता इसके बिलकुल विपरीत है। जब अँग्रेजों ने भारत को जीतना प्रारंभ किया तो भारत के अधिकांश भागों में राजा ऐसी जातियों से थे जिन्हें शूद्र वर्ण का माना जाता था।[7]

इस प्रकार भारतीय समाज जो आपस में प्रेमभाव से रहकर अपना जीवन यापन करता था उसके गौरव को नष्ट करने, आपस में घृणाभाव उत्पन्न करने तथा उनकी पुरातन ज्ञान परंपरा को मिथक बताने, भारतीय साहित्य को झूठा साबित करने तथा समृद्धशाली इतिहास को अपने स्वार्थ के अनुसार लिखवाने के लिए अँग्रेज इतिहासकारों को भारत का इतिहास लिखने के लिए नियुक्त किया गया। जिनमें जेम्स मिल ने भारतीय इतिहास का वर्गीकरण धार्मिक आधार पर किया और जेम्स टॉड ने अपने इतिहास लेखन में राजपूतों को विदेशी संतान बताया जबकि ग्रांट डफ ने मराठा इतिहास में शिवाजी को पहाड़ी चूहा लिखा। मैक्स मूलर के कथन 'आर्य मध्य एशिया से आए थे' इसका अँग्रेजों ने बढ़ा चढ़ाकर प्रचार -प्रसार किया जिससे अपने साम्राज्य को उचित ठहराया जा सके।

भारतीयों का गौरव नष्ट करने तथा उनमें हीन भावना भरने के लिए भारतीय शिक्षा के मूल केन्द्र गुरुकुलों को नष्ट करने तथा भारतीय ज्ञान परंपरा को हेय दृष्टि से देखने वाला वर्ग भारत में तैयार हो इसके लिए टोमस बेबिंग्टन मेकॉले को भारतीय शिक्षा पद्धति तैयार करने के लिए बुलाया गया।

'संस्कृत में लिखी गईं सभी पुस्तकों की ऐतिहासिक जानकारी एकत्रित करने पर वह इंग्लैण्ड की एक प्राथमिक पाठशाला के लिए तैयार की गई संक्षिप्त जानकारी का समावेश करने वाली पुस्तक से भी कम होगी।'[8]

सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य को उपेक्षित दृष्टि से नकार देना तथा तुलनात्मक रूप से भारतीय ज्ञान पर नकारात्मक टिप्पणी करके भारतीयों के मन में हीनभाव उत्पन्न करने का कार्य मेकॉले द्वारा किया गया।'एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय की एक टाँड़ पर रखी गईं पुस्तकों में जितना ज्ञान समाहित है वह सम्पूर्ण भारत तथा अरेबिया के

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

कुल ज्ञान से अधिक है।'[9] इस प्रकार की हतोत्साहित करने वाली टिप्पणियाँ करके भारतीयों का मनोबल तोड़ना एवं उनमें हीनता का भाव उत्पन्न करना उसका मुख्य उद्देश्य था।

संस्कृत के स्थान पर अँग्रेजी तथा प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के स्थान पर यूरोपीय शिक्षा लागू करने के पीछे का उद्देश्य भारत में अँग्रेजी शासन को दीर्घजीवी बनाना और अपने साम्राज्य का औचित्य सिद्ध करने के लिए एक ऐसे वर्ग को तैयार करने का प्रयास करना था जो रक्त, माँस तथा वर्ण से तो भारतीय हो, परंतु आचरण, दृष्टिकोण, मूल्यों तथा बुद्धि से अँग्रेज हो।[10] उसने भारत की मूल पहचान को नष्ट करने तथा उसे भारत से इंडिया बनाने के लिए, एकतरफ़ चल रहीं पारंपरिक पाठशालाओं को बंद करवा दिया एवं संस्कृत पुस्तकों को छापने पर प्रतिबंध लगा दिया तो दूसरी तरफ़ शिक्षा का माध्यम देशी भाषाओं के स्थान पर अँग्रेजी रखा गया तथा अँग्रेजी विद्यालयों की स्थापना करवाई।

टी.बी. मैकॉले द्वारा भारत के सुनहरे अतीत को धूमिल करने तथा यूरोपीय ही श्रेष्ठ हैं एवं उनका शासन ही भारतीयों के विकास व आधुनिकीकरण, शिक्षित करने लिए आवश्यक है आदि भ्रामक प्रचार करना अत्यंत भयावह था। और यह प्रचारित करना कि भारतीय लोग यूरोपीय लोगों की अपेक्षा ना तो युद्धकला में प्रवीण हैं और न ही उनमें पौरूष है नितांत निंदनीय था। उनके अनुसार भारतीय अंधविश्वास में जीने वाले हैं, जिनकी जाति, वर्ण व्यवस्था निकृष्ट व निंदनीय है। अँग्रेज यह सिद्ध करने में सफल रहे कि भारत का जो भी श्रेष्ठ है वह निम्नस्तरीय, निकृष्ट तथा हेय है और यूरोपीय जो कुछ भी है वह सब श्रेष्ठ है।

समृद्ध, सुव्यवस्थित, सुसंस्कृत तथा विकसित भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन परंपरा है, जिसे नष्ट करने एवं भारत व इंडिया के बीच की खाई को और अधिक गहरी करने वाली यूरोपीय शक्तियों ने व्यवस्थाओं का निर्माण इसप्रकार किया कि भारतीयों की सृजनशीलता, मौलिकता कुंठित हो गई और मूल्यों का ह्रास होता चला गया। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीयों का गौरव नष्ट हो गया वे स्वयं अँग्रेजी शिक्षा से पढ़ने के पश्चात अभिमान करने लगे और यूरोपीय दास बनना उनके लिए गौरव की बात हो गई। अँग्रेजी शिक्षण संस्थानों से इस प्रकार की मानसिकता पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित होती गई और इस दासता की मानसिकता के समक्ष अपनी विवेकयुक्त तीक्ष्ण बुद्धि विलुप्त हो गई ।

सबसे बड़ा झूठ अँग्रेजों द्वारा यह प्रचारित किया गया कि भारत असभ्य, अशिक्षित है इसलिए ब्रिटिश सरकार उनकी शिक्षा का प्रबंध करेगी जबकि सच्चाई इसके बिल्कुल विपरीत थी। वैदिक काल से लेकर 1835 ईस्वी

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

तक भारत की शिक्षा व्यवस्था अधिक सुविकसित थी। समाज के आर्थिक सहयोग से पोषित लगभग हर गाँव में पाठशाला हुआ करती थी, जिसमें सभी जातियों के अध्यापक और विद्यार्थी शिक्षा का आदान-प्रदान किया करते थे। विलियम एडम ने अपनी निरीक्षण रिपोर्ट में बताया कि 1830-40 ईस्वी के वर्षो में बंगाल व बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 100000 पाठशालाएँ थीं।[11] इसी प्रकार दूसरा अभिमत थॉमस मुनरो का था। जो उसने ने चैन्नई प्रांत के लिए व्यक्त किया था। इस अभिमत में उसने बताया कि 'यहाँ प्रत्येक गाँव में एक पाठशाला थी।'[12] अर्थात् 18वीं सदी तक भारत में शिक्षा व्यवस्था अत्यंत सुव्यवस्थित व समृद्ध थी किंतु मैकाले द्वारा थोपी गई अँग्रेजी शिक्षा नीति ने भारत को आंतरिक रूप से खोखला कर दिया। उसने भारतीयों का एक ऐसा वर्ग खड़ा कर दिया जो अँग्रेजों के जाने के पश्चात् भी मेकॉले की अप्रमाणिक बातों को भी वेदवाक्य मानते हैं तथा विदेशी उदाहरण देकर स्वयं को धन्य समझते हैं।

इंडिया को पुनः भारत बनाना तथा उसके खोए हुए गौरव को पुनःजाग्रत करने के लिए हमें अपनी प्राचीन गुरुकुलशिक्षा पद्धति को युगानुकूल बनाना पड़ेगा। सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करने वाली भारतीय शिक्षा ही अँग्रेजियत की मानसिक दासता से मुक्ति प्रदान कर सकती है। प्राचीन काल की तरह शिक्षा को शासकीय नियंत्रण से मुक्त कर समाज पर आधारित बनाना होगा क्योंकि भारतीय संस्कृति में शिक्षा को पवित्रतम प्रक्रिया माना जाता है।

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'[13]

गीता में श्रीकृष्ण ने ज्ञान को सबसे अधिक पवित्र माना है। जिस तरह प्राचीन काल की शिक्षा गुरूकुल प्रणाली पर आधारित थी ठीक उसी प्रकार की पद्धति अपनाना वर्तमान में अव्यावहारिक है किंतु राष्ट्रीय पुनरुत्थान के लिए युगानुकूल गुरूकुलों की स्थापना करना और शिक्षक के खोए हुए सम्मान को पुन:स्थापित करना अधिक आवश्यक है। शिक्षा को शासकीय नियंत्रण से मुक्त कर समाज पोषित बनाना जिसमें राष्ट्रभाव से युक्त पाठ हों। यही भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों पर आधारित, गौरव जगाने वाली शिक्षा ही भारत को मानसिक दासता से मुक्त कर सकती है।

अँग्रेजों ने भारतीय शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार तक सीमित कर दिया था। रोजगार के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण, नैतिक मूल्य एवं अधिकारों के साथ कर्त्तव्यों का बोध कराने वाली शिक्षा ही उत्तम है। चाणक्य जैसे शिक्षक तथा एकलव्य जैसे विद्यार्थियों का निर्माण करने वाली शिक्षा पद्धति से ही राष्ट्रीय पुनरुत्थान संभव है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

निष्कर्ष - शिक्षा का मूल उद्देश्य चरित्र निर्माण, व्यक्ति का सर्वांगीण विकास, राष्ट्र निर्माण, सामाजिक कर्त्तव्य पालन, आर्थिक समृद्धि तथा राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण व संवर्धन करना होना चाहिए। राष्ट्रीय पुनरूत्थान की दिशा में भारतीय संस्कारों से युक्त रसमयी शिक्षा ही आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम होगी। हमें अपनी प्राचीन शिक्षा के आदर्शों, नैतिक मूल्यों को संतुलित, संयमित रूप में आधुनिक विज्ञान, तकनीकी प्रगति और वैश्विक दृष्टिकोण के साथ जोड़कर एक संतुलित युगानुकूल शिक्षण प्रणाली का विकास करना होगा इससे निश्चित ही भारत पुनः अपनी सांस्कृतिक और बौद्धिक गरिमा को प्राप्त कर विश्व को आलोकित करने वाले परमवैभवयुक्त राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित होगा।

संदर्भ-

1. श्रीविष्णुपुराण,अध्याय-19,श्लोक-41,संवत्-2076,गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन,पृ.क्रमांक-95
2. श्रीरामचरितमानस,बालकाण्ड,दोहा-204,चौपाई-4,संवत्-2075,गीताप्रेस गोरखपुरप्रकाशन, पृ.क्रमांक-110
3. तोमर,लज्जाराम,(अप्रैल 2015), संस्करण-षष्ठम्,भारतीय शिक्षा के मूल तत्व, सुरूचि प्रकाशन,नई दिल्ली, पृ.क्रमांक- 15
4. श्रीईशोपनिषद, श्लोक-1,संस्करण-5,गीताप्रेस गोरखपुर पृ.क्रमांक-14
5. श्रीरामचरतिमानस, बालकाण्ड, दोहा-205, चौपाई -6,उपर्युक्त
6. सोनी,सुरेश,(अगस्त 2017), संस्करण -षष्ठम्, भारत में विज्ञान की उज्ज्वल परंपरा, अर्चना प्रकाशन,भोपाल पृ.क्रमांक-11
7. धर्मपाल,(20मार्च,2007), भारत का पुनर्बोध, पुनरूत्थान ट्रस्ट, अहमदाबाद, पृ.क्रमांक-13
8. धर्मपाल,(20 मार्च 2007), भारत की लूट एवं बदनामी, पुनरूत्थान ट्रस्ट अहमदाबाद, पृ.क्रमांक-95
9. धर्मपाल, (20 मार्च 2007), भारत की लूट एवं बदनामी, उपर्युक्त
10. धर्मपाल, (20 मार्च 2007),भारत की लूट एवं बदनामी, उपर्युक्त पृ.क्रमांक-101
11. धर्मपाल,(20 मार्च 2007) रमणीयवृक्ष 18वीं शताब्दी में भारतीय शिक्षा, पुनरूत्थान ट्रस्ट, अहमदाबाद, पृ.क्रमांक-19
12. धर्मपाल, (20 मार्च 2007),रमणीय वृक्ष, उपर्युक्त
13. श्रीमद्भगवतगीता, अध्याय-चतुर्थ, श्लोक-38, गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन